Dr. Raman kumar thakur
Department of Economics
L.N.M.U.Darbhanga

Assistant professor (Guest)
D.B.College,Jaynagar

Class:-B.A.part_1 (H)
Date:-17 AprIL 2020

"मुद्रा नीति के उद्देश्य"

(Objectives of monetry policy):→

इस सिद्धांत का मूल तथ्य यह है कि मुद्रा की मात्रा में इस प्रकार परिवर्तन किया जाए की मूल्य स्तर पर कोई प्रभाव नहीं पड़ने पाए। तटस्त मुद्रा नीति अहस्तक्षेप नीति की विचारधारा पर आधारित है। इस नीति के अनुसार मूल्य में स्थायित्व रखने की अपेक्षा मुद्रा की मात्रा को स्थिर रखना आवश्यक है। वर्तमान समय में मुद्रा आर्थिक स्थिरता का कारण है ।एक ओर मुद्रा प्रसार से मुद्रा की स्फीति उत्पन्न होती है । दूसरी ओर मुद्रा का संकुचन से अवस्फीति । दोनों ही अवस्था मौद्रिक नीति की सूचक है।

वर्तमान समय में मौद्रिक नीति का लक्ष्य पूर्ण रोजगार की स्थिति प्राप्त करना है । पूर्ण रोजगार का अर्थ यह है कि समय विशेष पर प्रचलित वेतनमान पर उन सभी व्यक्तियों को काम मिलना चाहिए जो काम करने की इच्छुक हैं। पूर्ण रोजगार का यह अभिप्राय नहीं है कि कोई भी व्यक्ति बेकार नहीं है ।
1). वित्तीय संस्थाओं का निर्माण तथा विस्तार (creation and Expansion of financial institutions): →अल्पविकसित देश में मुद्रा नीति का एक लक्ष्य उसकी करेंसी और साख व्यवस्था का सुधार करना है। अधीक साख सुविधाएं प्रदान करने के लिए और एक वस्तु को उत्पादक दिशाओं में मोड़ने के लिए अधिक बैंक तथा वित्तीय संस्थाएं स्थापित की जाएं और विकसित देशों में वित्तीय संस्थाएं बड़े शहरों तक सीमित रहती है ।और संपदा ,बागान बड़े औद्योगिक तथा व्यापारी घरों को साख सुविधाएं प्रदान करती है ।इसका उपचार यह है कि छोटे दुकानदारों तथा व्यापारियों के लिए साख उपलब्ध कराने के लिए ग्रामीण क्षेत्रों तक शाखा बैंकिंग तथा एकक (Unit) बैंकिंग का विस्तार किया जाए। प्रभावपूर्ण मुद्रा नीति के लिए आवश्यक शर्त यह है कि एक मजबूत तथा शक्तिशाली केंद्रीय बैंक हो।

2). समुचित ब्याज दर नीति (A Suitable Interest Rate policy) अल्पविकसित देश में ब्याज दर का ढांचा बहुत ऊंचे स्तर पर स्थित रहता है दीर्घकालीन तथा अल्पकालीन ब्याज दरों के बीच तथा अर्थव्यवस्था के विभिन्न क्षेत्रों में ब्याज की दरों में बहुत अधिक असमता होती है।

3). ऋण प्रबंध (Debt management):→ अल्पविकसित देश में सार्वजनिक ऋण का प्रबंध करना मुद्रा नीति के महत्वपूर्ण कार्यों में से एक है ।इसका लक्ष्य सरकारी बॉन्डों का उचित समयमान जारी

करना, उनकी कीमतों को स्थिर करना ,और सार्वजनिक ऋण की लागत को न्यूनतम बनाना केंद्रीय बैंक सरकारी बॉन्डों के क्रय- विक्रय और सार्वजनिक ऋण की लागत को न्यूनतम बनाना केंद्रीय बैंक सरकारी बांडो के क्रय विक्रय तथा सार्वजनिक ऋण के ढांचे तथा संरचना में समय पर परिवर्तन करने का उत्तरदायित्व लेता है । ऋण प्रबंधन का प्रधान लक्ष्य है ऐसी स्थितियों का निर्माण करना जिनमें सार्वजनिक ऋण प्रोग्रामों को प्रोत्साहन देते हैं ।

4). मुद्रा के लिए मांग तथा मुद्रा की पूर्ति के बीच समुचित समायोजन (Proper Adjustment between Demand for and supply of money):→ मुद्रा की मांग एवं पूर्ति में संतुलन मुद्रा नीति का महत्वपूर्ण साधन है । दोनों के बीच संतुलन कीमत स्तर में प्रकट होता है । मुद्रा पूर्ति की कमी से विकास में बाधा होगी । जबकि इसकी अधिकता स्फीति लाएगी। जब अर्थव्यवस्था का विकास होता है । तो अमुद्रीकृत क्षेत्र के धीरे-धीरे मुद्रीकरण तथा कृषि तथा औद्योगिक उत्पादन तथा कीमतों में वृद्धि के कारण मुद्रा की मांग बढ़ जाएगी।

5). स्फीति नियंत्रण (To Control Inflation) मौद्रिक नीति का कार्य स्फीति को नियंत्रित करना होता है। जब विकसित अर्थव्यवस्थाओं में विकास की प्रक्रिया को बढ़ाने के लिए साख मुद्रा तथा निवेश की मात्रा को बढ़ाया जाता है तो रोजगार के साधन बढ़ते हैं। तथा आय में वृद्धि होती है। ऐसे देशों में लोग अधिकतर गरीब होते हैं ।जिनकी उपभोग प्रवृत्ति अधिक होती है । जब ऐसे लोगों की आय में वृद्धि होती है। तो साधन उपभोग वस्तुओं की मांग बढ़ जाती है। परंतु पूंजी तथा अन्य सहायक साधनों की कमी के कारण इन वस्तुओं की पूर्ति को अल्पकाल में बढ़ाया नहीं जा सकता। इसमें कीमतें बढ़ने लगती हैं ।और यदि यह प्रक्रिया चलती रहे तो स्फीति का रूप धारण कर लेती है ।